Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 2 | (April – June 2026)

'रेहन पर रग्घू' में ग्रामीण एवं आधुनिक परिवेश के बीच बनते-बिगड़ते रिश्ते

डॉ. पुष्प लता कुमारी
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, रामलखन सिंह यादव महाविद्यालय, बख्तियारपुर,
पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना- 800020

सारांशः

काशीनाथ सिंह द्वारा रचित 'रेहन पर रग्घू' अपने समय की उत्कृष्ट कृति है। यह अत्यंत गंभीर विषय एवं बदलते सामाजिक मूल्य पर आधारित उपन्यास है। आज के संदर्भ में यह उपन्यास अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि यह 'व्यक्ति के अकेलेपन' को चरितार्थ करती है। परिस्थितिवश गाँव एवं शहर में परिवारों के दो अलग-अलग स्थानों पर रहने से आपसी समन्वय की कमी देखने को मिलती है। समयाभाव, व्यस्तता, आधुनिक जीवन की लालसा, इच्छाशक्ति में कमी एवं बात-व्यवहार के कारण व्यक्ति परिवार से दूर हो अकेलेपन का शिकार हो जाता है। उपन्यासकार ने रघुनाथ के माध्यम से उसके अकेलेपन एवं संघर्ष को दर्शाने का प्रयास किया है। परिस्थितिवश अपने भरे-पूरे परिवार जिसमें पत्नी, दो बेटे और एक बेटी होने के बावजूद भी रघुनाथ को बुर्जुगावस्था में अकेले जीवन जीने को विवश होना पड़ता है। जिस उम्र में व्यक्ति को अपने परिवार के साथ और सहयोग की आवश्यकता होती है, उस उम्र में व्यक्ति का अकेले जीवन व्यतीत करना बड़ा कष्टकारक होता है। 'व्यक्ति का अकेलापन' आज के समाज के लिए अत्यंत सोचनीय, गंभीर एवं खतरनाक अवस्था है क्योंकि आज नयी पीढी इसी ढर्रे पर चल रही है। आज व्यक्ति को अपने बुर्जुगों से सम्मान, प्यार अपनापन और साझेदारी बना कर रखना चाहिए जिससे उनका जीवन आसानी से कट सके। काशीनाथ सिंह ने अपने उपन्यास में विविध पात्रों के माध्यम से आधुनिक जीवन की इस विडम्बना का विस्तृत विवेचन किया है।

मुख्य शब्दः काशीनाथ सिंह, व्यक्ति, परिवार, अकेलापन, ग्रामीण एवं शहरी परिवेश

मूल आलेख

'रेहन पर रग्घू' काशीनाथ सिंह द्वारा रचित बहुचर्चित एवं प्रतिष्ठित उपन्यास है। इसकी कथा के केन्द्र में रघुनाथ और उसका परिवार है। इसकी कथा पहाड़पुर गाँव के 71वर्षीय मास्टर पद से सेवानिवृत रघुनाथ के इर्द-गिर्द घुमती है। यह उपन्यास मुख्यतः ग्रामीण जीवन से शहरी जीवन की ओर बढ़ती उन्मुखता के कारण पारिवारिक जीवन में हो रहे परिवर्तन एवं संघर्ष (बनते-बिगड़ते रिश्ते) का बेजोड़ आख्यान है। यह उपन्यास शहरीकरण, आधुनिकता, बदलते सामाजिक संबंध एवं अकेले पड़ते जा रहे मध्यवर्गीय परिवार की कहानी है।

जीवन में पारिवारिक रिश्तों का बहुमूल्य स्थान है। पारिवारिक रिश्ता परिवार के सदस्यों के बीच भावनात्मक एवं सामाजिक संबंधों को संदर्भित करता है। परिवार प्यार, अपनेपन और त्याग से बनता है, किन्तु व्यक्ति आज पारिवारिक संबंधों के मूल्य को भूलता जा रहा है। इसी कारण हर घर में परिवार का रूप संक्षिप्त होता जा रहा है। अब आधुनिक युग में एकल परिवार भी देखने को मिल रहे हैं। संकुचित परिवार होने से व्यक्ति अकेलेपन का शिकार होता जा रहा है। यह समाज में नई एवं गंभीर समस्या का रूप ले रही है। आज रिश्तों में बिखराव का सबसे बड़ा कारण आधुनिक जीवन शैली की लालसा एवं उसके प्रति महत्वाकांक्षी होना है। रिश्ता चाहे ग्रामीण परिवेश का हो या आधुनिक परिवेश का दोनों के बीच सामंजस्य बनाकर चलना बेहतर है। माता-पिता यदि गाँव में हैं और उनकी

संतानें शहर में हैं, तो उन्हें आपसी संपर्क और तालमेल बनाकर रखना चाहिए। उपन्यास में इसी समस्या के कारण रिश्तों में तनातनी एवं बिखराव देखने को मिलता है।

आज पारिवारिक रिश्तों में संघर्ष या बिखराव का एक कारण नयी पीढ़ी का ग्रामीण जीवन के प्रति बढ़ती उदासीनता एवं शहरी जीवन के प्रति बढ़ती लालसा है। ग्रामीण जीवन सहज, सरल, एवं कर्मठ होता है जो व्यक्ति को मिट्टी से जोड़ता है, जबकि शहरी जीवन सुव्यवस्थित एवं सुविधायुक्त होता है जो व्यक्ति को अधिक आकर्षित करता है। आज का व्यक्ति सुविधा भोगी हो गया है, इसी कारण वह ग्रामीण जीवन छोड़ शहरी जीवन की ओर उन्मुख हो रहा है। दूसरी तरफ घर के बुजुर्गों का अधिकांश जीवन गाँव में व्यतीत होने के कारण उनका जुड़ाव ग्रामीण जीवन एवं उससे संबंधित खेत-खलिहान, घर एवं रिश्तें इन सभी से होता है। इस कारण पुरखों की निशानी को छोड़ना इनके लिए आसान नहीं होता है, फिर भी वे उनकी सन्तानों की शिक्षा, नौकरी या अन्य उद्देश्य से गाँव छोड़ नजदीकी शहर में चले जाते हैं और धीरे-धीरे बस जाते हैं। इस तरह निजी जीवन की व्यस्तता के कारण गाँव से उनका लगाव कम होता चला जाता है। उपन्यास में यह दिखाया गया है कि बनारस में 'अशोक विहार' नामक कॉलोनी है, जहाँ बुजुर्गों की संख्या अधिक है। वह अपनी संतानों की असुविधा की दृष्टि से गाँव के नजदीकी शहर में आ जाते हैं और आज उनकी ही संतानें उन्हें उस शहर में अकेला छोड़कर अन्य जगह सर्विस कर रही है- "वे अपनी जगह-जमीन, रिश्ते-नाते, संगी-साथी, बाग-बगीचे, ताल-तलैया छोड़ कर जिन संतानों के लिए आए, वे ही बाहर। इतने तक तो गनीमत थी। लेकिन अब हालत यह है कि जो जहाँ सर्विस कर रहा है, वह उसी नगर में रम गया है और वहाँ से लौट कर यहाँ नहीं आना चाहता। अगर वह आना भी चाहता है तो उसके बच्चे नहीं आना चाहते! लीजिए यह नई मुसीबत! जिनके लिए बेघर हुए उन्हीं के अपने घर।"[1] आज समाज में कमोबेश यही स्थिति है जिसके कारण भरापूरा परिवार होने के बावजूद भी बुजुर्गों को अकेले जीवन व्यतीत करना पड़ता है। समकालीन समाज में अकेले पड़ते जा रहे मनुष्य का यह बहुत बड़ा दुःख है, जिसे उपन्यासकार ने रघुनाथ के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है। रघुनाथ की स्थिति भी ऐसी ही है। वह अपनी पत्नी के साथ गाँव में अकेले रहता है, किन्तु अपनी संतानों के लिए गाँव छोड़ने पर विवश होता है। बहू के बुलाने पर वह अशोक विहार नामक कॉलनी में आता तो है, लेकिन वहाँ वह बहू सोनल के साथ अकेले रहने के लिए मजबूर है, क्योंकि उनके दोनों बेटे-बेटी अलग-अलग स्थानों पर सर्विस करते हैं और वहीं रम गए हैं। वहीं दूसरी तरफ रघुनाथ की पत्नी शीला का बहू से नहीं बनने के कारण वह बेटी के साथ रहती है। इस प्रकार रघुनाथ एकाकी जीवन जीने को विवश होता है।

रिश्तों में बिखराव का एक अन्य बड़ा कारण व्यक्ति के बात एवं व्यवहार पर निर्भर है। रिश्तों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। यह किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का ऐसा गुण है, जिससे उसके रिश्ते बनते या बिगड़ते हैं। सकारात्मक, सम्मानजनक एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार से रिश्ते मजबूत होते हैं एवं आत्मीयता बढ़ती है, जबकि कठोर शब्द एवं आक्रामक व्यवहार से रिश्तें तनावपूर्ण बनते हैं। इससे व्यक्ति परिवार से दूर रहते हुए भी भावनात्मक रुप से जुड़ नहीं पाता। स्थान की दूरी के साथ-साथ भावनात्मक दूरी भी बढ़ जाती है। पारिवारिक संबंध रिश्तों को आन्तरिक मजबूती प्रदान करता है। रिश्ता चाहे पिता-पुत्र, पति-पत्नी, या पिता-पुत्री का हो, सभी अनमोल होते हैं। पिता-पुत्र का रिश्ता अनुशासन, समर्थन और जिम्मेदारी का होता है। बुढ़ापे में पुत्र ही पिता का एकमात्र सहारा होता है। किन्तु आज समाज में विपरीत परिस्थिति है। रघुनाथ अपनी पत्नी शीला के साथ गाँव में रहता है। उसका बड़ा बेटा संजय अपनी मर्जी से विवाह करता है और तीन साल के लिए अमेरिका चला जाता है या यों कहिए कि बस जाता है। छोटा बेटा धनंजय भी नोएडा में नौकरी की तलाश में है। बेटी सरला भी मिर्जापुर में नौकरी करती है और सप्ताहांत में घर आती है। स्थान की दूरी के कारण रघुनाथ को अपने बच्चों से सम्पर्क करने में परेशानी होती है। गाँव में जमीन-

जायदाद को लेकर वह हमेशा चिंतित एवं परेशान रहता है। रघुनाथ के लिए उसके दोनों पुत्र संजय और धनंजय उसके बुढ़ापे का सहारा थे, किन्तु दोनों पुत्र अपनी जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ लेते हैं। गाँव की पुश्तैनी जमीन की देखभाल एवं रख-रखाव के लिए अक्सर पिता-पुत्र में तनाव रहता था। रघुनाथ उम्र के उस पड़ाव में थे जहाँ उन्हें सहारे की जरूरत थी, जो उन्हें नहीं मिल रही थी। वे अक्सर कोई घटना घटित होने पर बेटे से सम्पर्क करते थे। गाँव में उनके घर के पीछे वाली जमीन खाली थी, जिस पर उनका भतीजा कब्जा करना चाहता था। एक दिन उनका भतीजा उस जमीन पर कब्जा करने की नियत से गाय-भैंस बाँध देता है। रघुनाथ के विरोध करने पर उन्हें मार-पीटकर एवं धक्का देकर बाहर निकाल दिया जाता है। उस वक्त उन्हें अपने बेटों की कमी खलती है। वे दोनों पुत्रों से बारी-बारी सम्पर्क करते हैं। संजय से सम्पर्क न होने की स्थिति में वे धनंजय से राय लेते हैं। धनंजय कहता है- “क्यों मरे जा रहे हैं जमीन को लेकर? छोड़िए उसे और सुनिए, भाभी बनारस आ गई हैं अशोक नगर में। ज्वाइन कर लिया है यूनिवर्सिटी में। आप माँ को लेकर चले जाइए और वहीं रहिए।”[2] धनंजय के नकारात्मक जवाब से रघुनाथ तिलमिला उठता है और गुस्से में अपनी भड़ास निकालते हुए कहता है- ”साले, तुम लोग बड़े हुए हो अपनी माँ का दूध पीकर। और तुम्हारी माँ की महतारी है यह जमीन। चावल, दाल, गेहूँ, तेल, पानी, नमक इसी जमीन के दूध हैं। और बोलते हो कि हटाइए उसे? छोड़िए उसे?”[3] इससे स्पष्ट पता चलता है कि धनंजय को उसकी पुश्तैनी जमीन की कोई परवाह नहीं है। वह शहर में बीत रहे अपनी जिन्दगी से खुश है और पिता को भी शहर में रहने के लिए कहता है। दूसरी तरफ रघुनाथ अपने बड़े बेटे संजय के प्रेम विवाह के कारण उससे काफी नाराज थे। वे संजय से रिश्ता तोड़ने का मन बना चुके थे, लेकिन पुत्र से रिश्ता तोड़ना असंभव था। रघुनाथ की अंतिम इच्छा थी कि पहाड़पुर में बने नये घर में वे अंतिम साँस लें, इसलिए नये घर के कार्य के लिए संजय से फोन पर पैसे की मदद माँगते हैं लेकिन संजय झल्लाकर जवाब देता है- “रुपए क्यों बरबाद करने पर तुले हुए हैं, उसके सदुपयोग के बारे में सोचिए!”[4] रघुनाथ को बड़े बेटे से ऐसी अपेक्षा नहीं थी, वे बेटे से रूठ जाते हैं। पुत्र की कटु बोली और अमर्यादित व्यवहार के कारण पिता-पुत्र के रिश्ते में खटास आ जाती है।

रघुनाथ अपनी बहू सोनल के बुलाने पर गाँव से शहर आ जाते हैं। घर एवं जमीन की जिम्मेदारी सनेही (गाँव का व्यक्ति) को दे देते हैं। एक दिन सनेही से उसे पता चलता है कि दो लड़के उसकी जमीन कब्जा करने की फिराक में है। वे टेंशन में आ जाते हैं। मजबूरीवश एवं उम्र के पड़ाव को देखते हुए जमीन-जायदाद की फाइनल डिसीजन के लिए वह संजय से फोन पर बात करते हैं। संजय चाहता था कि पिताजी जमीन-जायदाद बेचकर डेढ़ कमरे का बनारस में फ्लैट ले लें। बाकी पैसे जमा करें और उसके सूद से दोनों प्राणी जिएँ-खाएँ। बड़े बेटे की बात से वह बिफर पड़ते हैं। वे किसी भी कीमत पर पुरखों की जमीन को बेचने के लिए तैयार नहीं थे। इसी संबंध में वे धनंजय से राय मांगते हैं। वह भी जमीन-जायदाद बेच कर उस पैसे को दोनों भाईयों में आधा-आधा बाँटने की बात कहता है। इस समय उन्हें उनके दोनों बेटे निकम्में प्रतीत हो रहे थे। वे उन्हें फोन करके पछता रहे थे। जिस जमीन के लिए उन्होंने जी-जान लगा दी एवं जिसके सहारे अपनी सारी जिन्दगी गुजार दी, उस खेत को वे किसी भी कीमत पर बेचने के लिए तैयार नहीं थे। वे अपने दोनों बेटों के बात एवं व्यवहार से चिंतित हो उठते हैं। अंततः उन्हें उनके दोनों बेटों का साथ नहीं मिलता। इस प्रकार पिता एवं पुत्र का रिश्ता कभी बनता कभी बिगड़ता दिखाई पड़ता है।

रिश्तों में बिखराव का बड़ा कारण आधुनिकता की लालसा भी है। आज व्यक्ति आधुनिक जीवन शैली के प्रति अधिक लालायित है। वह इसके लिए ग्रामीण जीवन को छोड़ शहर में रहने को आतुर है। शहरी जीवन के सुख को भोगना आज हर व्यक्ति की कामना है। वह शहरी जीवन के सुख को ही असली सुख समझता है। व्यक्ति की इसी भोगेच्छा के कारण परिवार में तनाव एवं बिखराव की समस्या आज बढ़ रही है। वह गाँव के घर-परिवार को शिक्षा, नौकरी एवं

सुव्यवस्थित जीवन के लिए छोड़कर दूर शहर में बस जाता है और फिर वापस नहीं लौटना चाहता। आज व्यक्ति के इस रवैये से समाज में एक नयी समस्या उत्पन्न हो रही है जो बुजुर्गों के अकेलेपन से संबंधित है, जिसे उपन्यासकार ने रघुनाथ के साथ जोड़ा है। रघुनाथ के साथ भी यही समस्या है, जिसके कारण परिवार में उठा-पटक चलती रहती है। उसके दोनों बेटे अपनी इच्छानुसार आधुनिक जीवन जीना चाहते थे, इसलिए ग्रामीण जीवन से दूर थे। छोटा बेटा धनंजय नोएडा में नौकरी की तलाश में है और वहाँ वह विधवा किन्तु एक बच्चे की माँ, जो नौकरी करती थी, के साथ जीवन बसर कर रहा था। वह शहर में जैसी भी जिन्दगी जी रहा था, किन्तु गाँव वापस नहीं आना चाहता था क्योंकि वह शुरु से ही नवीनता के प्रति अत्याधिक आकर्षित रहा था। जब वह ग्रामीण जीवन में था, तब गाँव के आस-पास के घरों में पक्के मकान एवं फोन के विकास को देखकर वह भी पिता से घर में ढिबरी और लालटेन की जगह तार खिंचवा के लट्टू और फोन लगवाने की बात कहता था- “पहले तो इनसे कहो कि ये कंजूसी और दरिद्रता छोड़ें अब! हँसी उड़ाते हैं लोग। यह ढिबरी और लालटेन छोड़ें और दूसरों की तरह तार खिंचवा के कम-से-कम आँगन और दरवाजे पर लट्टू लगवा लें। रोशनी हो घर में! इसके साथ फोन भी लगवा रहे हैं लोग। घर में फोन होगा तो संजू भी जब चाहेगा बात कर लेगा।”[5] यह नयी पीढ़ी की आधुनिक जीवन शैली एवं नवीनता के प्रति लालसा को दर्शाता है। बड़ा बेटा संजय भी बहुत महत्वाकांक्षी था। वह नौकरी लगने पर तीन साल के लिए अमेरिका क्या चला जाता है, वहीं बस जाता है। उसकी महत्वकांक्षाएँ उसे वापस आने से रोक देती हैं। उसे पैसे से प्यार था, परिवार से नहीं; इसलिए वह ऐशों-आराम वाली जिन्दगी को चुनता है। वह ऊँचे पद एवं पैसों की लालच में कई नौकरी बदलता है। साथ ही पत्नी को छोड़कर अन्य स्त्रियों से नजदीकियाँ भी बढ़ाता है। इस प्रकार संजय और धनंजय आधुनिकता की अंधी दौड़ में अपने परिवार को छोड़कर नवीन जीवन शैली एवं नए रिश्तों को अपनाते हैं जिससे पारिवारिक रिश्तें बनते-बिगड़ते दिखाई पड़ते हैं।

उपन्यास में पिता-पुत्र के रिश्ते में बिखराव के अतिरिक्त पुत्री के कारण माता-पिता के रिश्ते में संघर्ष देखने को मिलता है। इस संघर्ष का कारण पुत्री सरला का विवाह है। रघुनाथ सरला को अधिक पढ़ाना नहीं चाहता था। वह बी॰ए॰ के बाद शादी की बात कहता है, किन्तु सरला पढ़-लिख कर नौकरी करना चाहती थी। इसमें माँ शीला बेटी का साथ देती है। सरला नौकरी कर लेती है और अब वह अपनी मर्जी से एवं अपनी शर्तों पर विवाह करने की इच्छुक थी, जिसमें उसकी स्वाधीनता सुरक्षित रहे। पिता बेटी की शादी में हो रही देरी से नाखुश थे। वह इसके लिए अपनी पत्नी को दोष देते हैं- “तुम्हीं ने सिर चढ़ाया है, तुम्हीं भुगतो! जब इसने बी॰ए॰ किया था तभी मैंने कहा था कि कर दो इसकी शादी! तो नहीं, अभी पढ़ेगी। एम॰ए॰ किया तो फिर कहा कि बहुत हो गया, अब कर दो! तो नहीं, अपने पैरों पर खड़ी होगी हमारी बेटी! नौकरी करेगी। अब देखो इसका रंग-ढ़ंग? मैंने कहा था तुमसे कि दुनिया का चक्कर लगाने से पहले पूछ लो अपनी लाडली से एक बार। नहीं पूछा, अब भोगो!”[6] इससे स्पष्ट है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसकी स्वाधीनता और पर्सनल स्पेस अनिवार्य है। इसे ध्यान में रखते हुए व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारियों को भी समझना चाहिए। इसकी आड़ में अपने माता-पिता के त्याग एवं मजबूरियों को दरकिनार करना या फायदा उठाना सही नहीं है, जिससे उनकी तकलीफ बढ़े। वहीं माता-पिता को भी संतानों की परिस्थितियों एवं इच्छाओं को ध्यान में रखकर काम करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

रेहन पर रग्घू उपन्यास हमें बुजुर्गों के हित एवं सुरक्षा के बारे में सोचने पर विवश करती है, क्योंकि आज की संतानें अपने व्यक्तिगत जीवन की सुख-सुविधाओं में इतनी व्यस्त हो गई है कि उसे अपने बूढ़े माता-पिता का ध्यान नहीं रहता एवं उनका दुःख दिखाई नहीं देता। समाज में फैल रही इस गंभीर समस्या को उपन्यासकार ने इस उपन्यास में

उठाया है। आज का व्यक्ति सिमित रिश्तों में बंधकर जीवन जी रहा है। इससे व्यक्ति तनाव एवं अकेलेपन का शिकार हो रहा है। अतः हमें अपने रिश्तों को सहेजने एवं सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता है। व्यक्ति अपने मृदु व्यवहार, अपनी इच्छाओं को सीमित कर एवं व्यस्त दिनचर्या से कुछ समय निकालकर ग्रामीण एवं आधुनिक परिवेश के बीच रिश्तों में संतुलन बिठाकर चल सकता है। इस प्रकार परिवार से दूर रहते हुए भी व्यक्ति को आपसी तालमेल, सम्पर्क एवं भावनात्मक संबंध बनाकर रखना चाहिए। इससे रिश्तों में प्रगाढ़ता एवं अपनापन बना रहता है। व्यक्ति को तनाव एवं अकेलेपन से बचने के लिए सदैव अपने अच्छे रिश्ते संभालकर रखना चाहिए जिससे भविष्य बेहतर हो सके।

संदर्भ ग्रंथ:

1. सिंह, काशीनाथ। (2022)। रेहन पर रग्घू। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, छठा संस्करण, पृष्ठ सं· 104 ।
2. वहीं, पृष्ठ सं· 84 ।
3. वहीं, पृष्ठ सं· 85 ।
4. वहीं, पृष्ठ सं· 133 ।
5. वहीं, पृष्ठ सं· 28 ।
6. वहीं, पृष्ठ सं· 51 ।